उच्चतर माध्यामिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन

डॉ0 अंजू यादव*

सारांश

उच्चतर माध्यामिक सतर के विद्यार्थियों के समायोजन पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव के अध्ययन हेतु यह शोध कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण हैं यह आयु वर्ग विद्यार्थियो के केरियर के लिये निर्माणकारी एवं परिवर्तनकारी होता है। जो उसे इच्छित सवं अपेक्षित भविष्य के लिये अवसर प्रदान करता है।

शहरी तथा ग्रामीण दोनों क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को आधार मानकर किये गये शेध कार्य में संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन दोनों ही महत्वपूर्ण कारक के रूप में प्रयुक्त किये गये, जिसके परिणम अपेक्षित प्राप्त हुये। यह शोध अध्ययन मानेाविज्ञान के बुद्धि के नव आचरण तथा विशिष्टकृत स्वरूप हेतु महत्वपूर्ण है।

प्रस्तावना

संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति के दैनिक जीवन तथा वातावरण में आने वाली चुनौतियों का सामना करने की योग्यता तथा क्षमता हैं, इसमें व्यक्ति की व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक क्रियॉए समाहित है, जिनके माध्यम से जीवन में सफलता मिलती है।

समायोजन से तात्पर्य व्यक्ति विशेष को जीवन को आवश्यक परिस्थितियों के अनुकूल बनाना है। जिससे वह व्यवस्थित रूप से सुव्यवस्था के साथ अपवनी आवश्यकताओं की पूर्ति करके आपेक्षित लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

उच्चतर माध्यामिक स्तर के विद्यार्थियों के लिये यह आयु एवं समय केरियर के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण एवं भविष्य दृष्टि से निर्धरक होता हैं अतः संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन दोनों महत्वपूर्ण कारक हैं इस अध्ययन में उच्चतर माध्यामिक स्तर के विद्यार्थियो के समायोजन पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान परिपेक्ष्य में विद्यार्थियो के लिये केरियर के विकल्प के व्यापक अवसर है, जिसमें अकसर चयन तथा चन उपरांत अध्ययन/प्रशिक्षण में अकसर दुविधा की स्थिति बन जाती है। अतः संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन मनोवैज्ञानिक कारक उसके लिये लाभदायक होते है। इस दृष्टि से यह शोध, विद्यार्थी, अभिभावक एवं समाज के लिये हितकारी है।

उद्देश्य

1. शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अधासकीय विद्यालयों के उच्चतर माध्यामिक स्तर के विद्यार्थियो के समायोजन पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन
2. ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय एवं अधासकीय विद्यालयों के उच्चतर माध्यामिक स्तर के विद्यार्थियो के समायोजन पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन

चर

1. संवेगात्मक बुद्धि– ''संवेगात्मक बुद्धि'' जहॉ एक और संवेगों के एवं अनके संबंधो को पहचानने में सहायका करती है, वही दूसरी ओर ये तर्क शक्ति के साथ मिलकर समस्या का समाधान करेन में भी सहायता करती है।

2. समायेाजन– समायेाजन रिंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति स्वयं और प्यावरण के बीच अधिक समाजस्यपूर्ण संबंध बनाये रखने के लिये अपने व्यवहार में परिवर्तन कर लेता है।

शैक्षणिक महत्व

वर्तमान परिपेक्ष्य में एक केरियर के लिये अनेक विकल्प उत्पनन होते है। एक विकल्प विशेष के लिये भ्ज्ञी अधोसंरचना, सुवधिाऍ, बेहतर, सुरक्षित भविष्य तथा पूर्व आर्थिक व्यवसायिक लाभी (Placement) आदि में

*असिस्टेंट प्रोफेसर, एल0बी0एस0 कालेज ऑफ ऐजूकेशन, जबलपुर, (मध्यप्रदेश)

व्यापक विविधताएँ होती है। अतः विद्यार्थी की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन का परस्पर प्रभावात्मक अध्ययन कर हम उसे बेहतर निर्देशन एवं मार्गदर्शन दे सकते है। इस दृष्टि से इस शोध का शैक्षणिक महत्व है।

साहित्य समीक्षा – संवेगात्मक बुद्धि

1. शर्मा, कामिनी (2012) – जयपुर शहर के महाविद्यालयीन, विद्यार्थियो (स्नातक) की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिणक उपलब्धि का अध्ययन किया। निष्कर्ष में दोनों के मध्य सकारात्मक सह संबंध पाया गया।

2. स्वापमी, सुब्रामव्यम (2014) – ने किशोरों की संवेगात्मक बुद्धि पर रहवास के स्थान एवं लंग के प्रभाव का अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया गया कि शहरी क्षेत्र के किशोरी (छात्र–छात्राओं) की संवेगात्मक बुद्धि, ग्रामीण क्षेत्र के किशोरों की तुलना में ज्यादा थी।

समायोजन

1. सिंघल, जयंत कुमार (2009) ने लखनऊ शहर के उच्चतर माध्यामिक स्तर के विद्यार्थियो की संवेगात्मक परिपक्वता एवं समायोजन स्तर का अध्ययन किया। परिणामस्वरूप संवेगात्मक परिपक्वता एवं समायोजन के मध्य उच्च सकारात्मक सहसंबंध पाया गया।
2. खान नियाज बी0 (2010) ने समायोजन एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंधो का अध्ययन किया। निष्कर्ष के दोनों के मध्य सार्थक सहसंबंध पाया गया।

परिकल्पना

1. शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के उच्चतर माध्यामिक स्तर के विद्यार्थियो के समायोजन पर संवेगात्मक बुद्धि का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडता है।

2. ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के उच्चतर माध्यामिक स्तर के विद्यार्थियो के समायोजन पर संवेगात्मक बुद्धि का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडता है।

योजना विधि

सर्वप्रथम शोध कार्य हेतु जिला शिक्षा विभाग जबलपुर से शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की सूची लेकर यादृच्छिक विधि द्वारा उनका चयन किया गया तत्पश्चात् कक्षा ग्यारहवीं (11जी) के विद्यार्थियों पर समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि के परीक्षणों का प्रशासन किया गया।

न्यादर्श

क्षेत्र	विद्यालय का नाम	विद्यार्थी की संख्या
शहरी	शासकीय –	
	1. शासकीय पं0 लज्जा शंकर झा उ0मा0 विद्यालय	32
	2. एम0एल0बी0 उ0मा0 विद्यालय, जबलपुर	33
	अशासकीय –	
	1. आर0एस0बेला सिंह उ0मा0 विद्यालय, जबलपुर	31
	2. सरस्वती शिक्षा मंदिर उ0मा0विद्यालय, जबलपुर	34
ग्रामीण	शासकीय –	
	1. शासकीय उ0मा0 विद्यालय, पिण्डरई	30
	2. शासकीय उ0मा0 विद्यालय, सालीवाडा	35
	अशासकीय –	
	1. विवेकानंद उ0मा0 विद्यालय, नुनसर	31
	2. सरस्वती शिक्षा मंदिर उ0मा0विद्यालय, बरेला	34

अनुसंधान

1. संवेगात्मक बुद्धि मापनी हेतु अनुकूल हाइड संजोत पैठे एवं उपेन्दरधर
2. समायोजन मापनी हेतु – बेल का समयोजन स्तर मापनी

सांख्यिकीय गणना

प्रस्तुत अध्ययन में एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन, एवं टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के उच्चतर माध्यामिक स्तर के छात्र/छात्राओं के समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि संबंधी तालिका

क्षेत्र	विद्यालय	समूह	संख्या N	माध्य M	मानक विचलन S.D.	स्वतंत्रता के अंश	+ मूल्य
शहरी क्षेत्र	शासकीय	छात्र + छात्रा	65	31.31	6.21	128	5.11
	अशासकीय	छात्र + छात्रा	65	36.95	6.37		
			65				

क्षेत्र	विद्यालय	समूह	संख्या N	माध्य M	मानक विचलन S.D.	स्वतंत्रता के अंश	+ मूल्य
ग्रामीण क्षेत्र	शासकीय	छात्र + छात्रा	65	30.25	6.05	128	3.04
	अशासकीय	छात्र + छात्रा	65	33.50	6.19		

विश्लेषण एसं परिकल्पना सत्यापन

1. शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियो के समयोजन पर संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव पडा। विद्यालयों के विद्यार्थियो अपेक्षा शहरी क्षेत्र के अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियो के समयोजन पर संवेगात्मक बुद्धि का अधिक प्रभाव पडा है। क्योकि शहरी क्षेत्र के अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियो में दैनिक जीवन एवं वातावरण की चुनौतियों का सामना करने की योग्यता रहती है।
2. ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थिया के समयोजन पर संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव पडा शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियो की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियो के समायोजन पर संवेगात्मक बुद्धि का अधिक प्रभाव पड़ा। क्योकि ग्रामीण क्षेत्र के अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियो में व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक क्रियाओं के कारण जीवन में सफलता का प्राप्त होना।

निष्कर्ष

उच्चतर माध्यामिक स्तर के विद्यार्थियो के समायोजन पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव के अध्ययन हेतु शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं एवं ग्रमीण क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के मध्य मूल्य की गणना की गई। इसके आधार पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुये।

1. शहरी क्षेत्र के अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियो के समायोजन पर संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। इसका कारण विद्यार्थियो में विशेष परिस्थितियों को अनुकूलित बनाने के लिये समायोजन क्षमता का होना।
2. ग्रामीण क्षेत्र के अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियो के समयोजन पर संवेगात्मक बुद्धि का प्रभव स्पष्ट दिखाई देता है। इसका कारण विद्यार्थियों द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अपेक्षित लक्ष्य को व्यवस्थित तरीके से प्राप्त करने में सक्षम होते है।

सुझाव

1. विद्यालय का वातावरण एवं सोच सकारात्मक होनी चाहिए। सकारात्मक सेचा अच्छे समायोजन में सहायता करती है।
2. विद्यार्थियो के संवेगो एवं भावनाओं के प्रति शिक्षक का व्यवहार सहानुभूति होना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

शर्मा, डॉ आर के (2008) शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ।

कपिल डॉ एच के (2007) सांख्यिकीय के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

भट्नागर, डॉ आर पी एवं भट्नागर, डॉ मीनाक्षी (2008), शिक्ष अनुसंधान, लॉयल बुक डिपो, मेरठ।